Volume-9, No. 1 Feb.-2022, pp. Hin.21-24

विद्यार्थियों के आत्मविश्वास पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन

डॉ० राजीव चतुर्वेदी, प्राचार्य
श्रीराम इंस्टीटयूट ऑफ मैनेजमेंट एंड टेक्नोलॉजी डिबाई
बुलन्दशहर उत्तर–प्रदेश भारत।

भूमिका

शिक्षा का कार्य बालक के व्यक्तित्व का विकास करना है जिससे बालक में अंतर्निहित शक्तियों का परिष्करण होता है जो बालक को समाजोपयोगी बनाकर उससे प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष दोनों ही रूपों का विकास करती है। इसमें छात्र अध्यापक तथा पर्यावरण परस्पर अंतः क्रियाएं करते हैं एवं समाज में होने वाले सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं पारिवारिक मूल्यों के परिवर्तनों से प्रभावित होते हैं। आज के संक्रमण काल में व्याप्त अनुशासन हीनता, शिक्षा का अपराधीकरण, नकल, महंगी शिक्षा, बेरोजगारी आदि समस्याएं हैं जिनके लिए अध्यापक उतना दोषी नहीं है जितना कि परिवार का वातावरण क्योंकि बालक के जीवन का अधिकांश समय अपने परिवार रिश्तेदार एवं मित्रों के साथ ज्यादा व्यतीत होता है एवं बालक अपने परिवार से प्रभावित होकर विद्यालयी वातावरण से बहुत अधिक सीखता है। माता–पिता दोनों का नौकरी करना, कठोर अनुशासन, अत्यधिक प्यार, संवादहीनता, एकाकी परिवार आदि ऐसे अनेक कारण हैं जो बालक के समुचित विकास, संवेगों के नियंत्रण, अभिव्यक्ति, अभिप्रेरणा एवं आत्मविश्वास को प्रभावित करते हैं। सामान्यतः बालकों में आत्मविश्वास की कमी पाए जाने से समाज बुरी तरह प्रभावित हो रहा है। समाज की यह विकृतता समाज शास्त्रियों को छात्रों के आत्मविश्वास का पुनरावलोकन करने हेतु प्रेरित करती है। प्रस्तुत शोध पत्र में इसी समस्या के निराकरण का प्रयास है जिसका प्रमुख उद्देश्य हैं।

मुख्य शब्द– आत्मविश्वास, पारिवारिक वातावरण

अध्ययन विधि–

प्रस्तुत शोध अध्ययन जनपद कांशीराम नगर में स्थित राजकीय एवं वित्त पोषित महाविद्यालयों जो डॉक्टर भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय से संबद्ध हैं, मैं अध्ययनरत स्नातक तृतीय वर्ष के विद्यार्थियों पर किया गया है तथ्यों के संकलन के लिए 200 विद्यार्थियों को निर्देशन विधि द्वारा चुना गया तथा साक्षात्कार अनुसूची द्वारा व्यक्तिगत साक्षात्कार के द्वारा तथ्यों को संकलित किया गया। संकलित सूचनाओं का वर्गीकरण विश्लेषण तथा सामान्यीकरण सांरव्यकीय आधार पर किया गया है। प्रस्तुत शोध प्रलेख को उच्च शिक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों के आत्मविश्वास पर अपने पारिवारिक वातावरण द्वारा पड़ने वाले प्रभावों के अध्ययन तक ही सीमित रखा गया है।

निदर्श व्यवस्थायन–

निदर्शित सुचनादाताओं को नगरीय, कस्बाई एवं ग्रामीय अंचलों के आधार पर विभाजित किया गया है जिससे पता चलता है कि केवल एक चौथाई छात्र नगरीय क्षेत्र से हैं तथा अधिकांश निदर्शित विद्यार्थियों की सामाजिक सांस्कृतिक एवं आर्थिक प्रष्ठभूमि ग्रामीण हैं, क्योंकि यदि कुछ सुविधाओं को हटा दिए जाए तो यहां ग्रामीण एवं कस्बाई स्तर पर अधिक मौलिक अन्तर नही प्रतीत होता है। प्रदत्त छात्रों में अधिकांश विद्यार्थियों का झुकाव कला वर्ग की ओर है एवं उसके बाद रुझान विज्ञान वर्ग की ओर है एवं सबसे कम रुचि वाणिज्य वर्ग की ओर है। तकनीकी समय में यह स्थिति सन्तोष जनक नहीं कही जा सकती है। सामान्यतः यह प्रतीत होता है कि उच्च आर्थिक स्थिति वाले माता पिता एवं उनकी सन्तानों का आत्मविश्वास अपेक्षाकृत उच्च स्तरीय होता है। इस संबंध में एकत्रित आंकड़े यह दर्शाते है, कि अधिकतर विद्यार्थियों के माता पिता सीमित संसाधनों में जीवन यापन करने की स्थिति में है। बहुत कम सूचनादाता उच्च आर्थिक स्थिति में है जिनके माता–पिता नौकरी पेशा, व्यवसायी या बड़े काश्तकार है। शेष सूचनादाताओं के परिवार निर्धन श्रेणी में आते है जो किसी प्रकार जीवन यापन ही कर पा रहे हैं और वर्तमान में मंहगी शिक्षा प्रदान करने हेतु संसाधन जुटाने में असमर्थ है ।

प्रस्तुत शोध में विद्यार्थियों से उनके माता–पिता एवं अभिभावकों के शैक्षिक स्तर की जानकारों करने पर मालूम पड़ा कि बहुत कम ऐसे माता–पिता या अभिभावक है जो स्नातक, स्नातकोत्तर तथा प्रशिक्षण प्राप्त है। अभिभावक के शैक्षिक स्तर का प्रभाव बच्चों के आत्मविश्वास पर पड़ना स्वाभाविक है। लगभग 87 प्रतिशत विद्यार्थियों ने यह स्वीकार किया कि उनके माता–पिता एवं अभिभावकों की आर्थिक एवं शैक्षिक

स्थिति उच्च होने के कारण उनका आत्मविश्वास मजबूत है। केवल 12.5 निदर्शित सूचनादातों का मानना था कि उनके माता–पिता एवं अभिभावकों की आर्थिक स्थिति का प्रभाव उनके आत्मविश्वास पर नहीं पड़ता है। आंकड़ों के विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकला कि अच्छी व्यापारिक स्थिति होने पर उनके बच्चों के आत्मविश्वास में भी वृद्धि होती है। सामाजिक स्थिति बालक के आत्मविश्वास को कितना प्रभावित करती है इस प्रश्न के उत्तर में लगभग 83 प्रतिशत सुचनादाताओं ने उच्च सामाजिक प्रस्थिति को बालक के आत्मविश्वास के संदर्भ में सकारात्मक एवं सार्थक प्रभाव का माना।

आत्मविश्वास मापन हेतु परीक्षण

चूंकि आत्मविश्वास एक मनोवैज्ञानिक प्रत्यय है इस सम्बन्ध में संकलित आंकड़ें यह निष्कर्ष प्रदान करते है कि–

1. 17.5 प्रतिशत निदर्शित सूचनादाता किसी समस्या के आने पर घबरा जाते हैं और 4.5 प्रतिशत सूचनादाता किंकर्तव्यविमूढ़ हो जाते है। इस प्रकार लगभग 12 प्रतिशत सूचनादाता आत्मविश्वास से हीन हैं।
2. 32 प्रतिशत निदर्शित सूचनादाता समस्याग्रस्त होने पर घबराते नहीं हैं। ऐसे सूचनादाता आत्मविश्वास से युक्त माने जा सकते है।
3. 56 प्रतिशत सूचनादाता समस्या ग्रस्त होने पर समस्या के समाधान हेतु प्रयासरत होते हैं निसंदेह ये सूचनादाता ही आत्मविश्वास से लबरेज माने जा सकते हैं।

जहाँ तक पारिवारिक वातावरण की बालक के आत्मविश्वास से सम्बद्धता की बात है लगभग निदर्शित सूचनादाता अपने आत्मविश्वास से भरे होने का कारण अपने माता–पिता को ही मानते हैं एवं पारिवारिक वातावरण को प्रभावी मानते हैं शेष (बालक विभिन्न कारणों से परिवार के अलावा अन्य कारणों को अपने आत्मविश्वास के लिये महत्वपूर्ण मानते हैं। बालक अपने माता–पिता एवं पारिवारिक वातावरण से ही आत्मविश्वास का सबक सीखता है। जिन अभिभावक के बालक अपने माता–पिता को समस्या उत्पन्न होने पर घबराते हुए देखते है, वे बालक प्रायः आत्मविश्वास से रहित हो जाते है। इस सम्बन्ध में आकड़ों की विश्लेषणाएं प्रदर्शित करती हैं कि 31.5 प्रतिशत निदर्शित सूचनादाता के माता पिता समस्या उत्पन्न होने पर आत्मविश्वास से ही परिपूर्ण व्यवहार करते हैं। 49.5 प्रतिशत सूचनादाताओं के माता पिता समस्या आने पर धैर्य बनाए रखते हैं। 10.5 प्रतिशत सूचनादाताओं के माता पिता एवं अभिभावक समस्या का सामना करते हैं एवं समाधान खोजने का प्रयास करते हैं। इस प्रकार 91.5 प्रतिशत सूचनादाताओं के माता पिता समस्याग्रस्त होने पर आत्मविश्वास का प्रदर्शन करते हैं। शेष 8.5 प्रतिशत सूचनादाताओं के माता–पिता समस्याग्रस्त होने पर असहाय हो जाते हैं। और बालक की कोई सहायता नहीं करते। बालक समस्या आने पर वैसा ही व्यवहार करता है जैसे उसके माता–पिता एवं अभिभावक करते हैं। यह पूछे जाने पर कि समस्या समाधान हेतु परिवारीजनों की क्या प्रतिक्रिया होती है।

1. 54 प्रतिशत निदर्शित सूचनादाता अपनी समस्याओं के समाधान हेतु माता–पिता या अभिभावक पर निर्भर करता हैं।
2. 32.5 प्रतिशत निदर्शित विद्यार्थी समस्या समाधान हेतु अपने अनुभवों एवं सोच पर निर्भर करते हैं।
3. लगभग 10 प्रतिशत सूचना दाता अपने माता पिता अथवा अभिभावक के बिना अपने को असुरक्षित महसूस करते हैं। अतः कहा जा सकता है कि लगभग 96% सूचना दाता स्वयं या माता–पिता के कार्य एवं व्यवहार से अपने आत्मविश्वास का विकास करते हैं।

घर पर किसी विशिष्ट व्यक्ति या अधिकारी के आने पर जिन बालकों के अभिभावक निर्भय होकर आत्मविश्वास के साथ उचित व्यवहार करते हैं वह उनके आत्मविश्वास से परिपूर्ण होने का सूचक होता है इस संबंध में तत्वों की विश्लेषणाएं यह बताती हैं कि–

तालिका–1
विभिन्न संदर्भों में निदर्श का वितरण

संदर्भ–1	**अंचल**	**नगरीय**	**कस्बाई**	**ग्रामीण**	**योग**
	संख्या	50	80	70	200
	प्रतिशत	25	40	35	100
संदर्भ–2	**संकाय**	**कला**	**विज्ञान**	**वाणिज्य**	**योग**
	संख्या	132	56	12	200
	प्रतिशत	66	28	6	100
संदर्भ–3	**व्यवसाय**	**कृषि**	**नौकरी**	**मजदूरी**	**योग**
	संख्या	73	95	32	200
	प्रतिशत	36.50	47.50	16	100
संदर्भ–4	**सामाजिक स्थिति**	**उत्तम**	**सामान्य**	**निम्न**	**योग**
	संख्या	50	125	25	200
	प्रतिशत	25	62.50	12.50	100

तालिका –2

		अधिकारी द्वारा जांच पड़ताल करने में	उचित जवाब देने का कारण	बातचीत में हिचक का कारण
क	संख्या	80	54	87
	प्रतिशत	40.00	67.50	75.50
ख	संख्या	56	16	21
	प्रतिशत	28.00	20	17.50
ग	संख्या	38	10	09
	प्रतिशत	19.00	12.50	7.50
घ	संख्या	26	––	03
	प्रतिशत	13.00	––	2.50
ड़	संख्या	200	80	120
	प्रतिशत	100	100	100

क. 40 प्रतिशत सुचनादाता उस अधिकारी के प्रश्नों के उत्तर अपने माता–पिता की अनुपस्थिति में भी आत्मविश्वास पूर्ण ढंग से देते है।

ख. 13 प्रतिशत सूचनादाता अपने माता पिता की उपस्थिति में ही प्रश्नों के उत्तर देना चाहते हैं। (यदि अन्य चर सुसुप्तावस्था में रहें) ऐसे छात्र–छात्राओं का आत्मविश्वास अल्प माना जा सकता है।

ग. 19 प्रतिशत सुचनादाता के माता–पिता या अभिभावक घर में उपस्थित रहते हुए भी अनुपस्थित होने का बहाना बना देते है

घ. 28 प्रतिशत सुचनादाता इस अधिकारी से बात करने के लिये किसी समीपतम प्रतिष्ठित व्यक्ति को बुलाकर लाते है। ऐसे सूचनादातों में भविष्य में भी आत्मविश्वास में कमी रहने की संभावना अधिक होती है। अर्थात **"आत्मविश्वास वह मनोसामाजिक प्रत्यय है जिसका उदभव एवं विकास पारिवारिक परिवेश में ही होता है और इसके लिये माता–पिता एवं अन्य परिवारीजन ही विशेषतः उत्तरदायी होते हैं"**।

पुनश्चः इसकी पुष्टि हेतु विश्लेषणाएं बताती है कि–

क. जो बालक बेहिचक बातचीत करता है और युक्त संगत जबाब देता है उसके माता पिता भी ऐसा करते है और आत्मविश्वास का यह पाठ उसने अपने माता –पिता से ही सीखा है।

ख. 20 प्रतिशत सूचनादाता बातचीत में अपने आत्मविश्वास का श्रेय दृश्य–श्रव्य सामग्रियों को देते हैं।

ग. लगभग 13 प्रतिशत सूचनादाता बातचीत में अपने आत्मविश्वास का श्रेय अपनी मित्र मण्डली को देते हैं। इसी प्रकार जिन निदर्शित छात्र छात्राओं को आगंतुक अधिकारी से बातचीत में हिचक होती है उसके कारण भी विभिन्न परिवारिक परिस्थितियों से ही जुड़े है।

निष्कर्ष–

अतः कहा जा सकता है कि विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का उनके आत्मविश्वास पर उच्चस्तरीय प्रभाव होता है। अर्थात आत्म विश्वास पारिवारिक परिवेश से ही जन्म लेता है एवं वही पुष्पित एवं पल्लवित होकर बालक के व्यक्तित्व को निखारता है। बालक के आत्मविश्वास के विकास में परिवार की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

सुझाव–

मेरा सुझाव है कि–

1. अभिभावक एवं माता पिता बालकों के प्रति सदैव निष्पक्ष रहकर उनके क्रियाकलापों का अवलोकन करें एवं उन पर उचित प्रतिक्रिया दें।
2. माता पिता का व्यवहार ही बच्चों के व्यक्तित्व का समग्र विकास करता है अतः उन्हें चाहिये बालकों के समक्ष कोई ऐसा आचरण न हो जो बालकों में कुत्सित मूल्यों को उत्पन्न करे
3. बालक अपने माता पिता एवं परिवारीजन के क्रियाकलापों, सलाहों एवं रूचियों को ही आप्त बचन मानता है अतः उनका ये दायित्व है कि वे समस्याग्रस्त बालक के साथ ऐसा व्यवहार करें जिससे उसमें धैर्य, शुचिता, शालीनता एवं आत्मविश्वास में वृद्धि हो।
4. सरकारी तौर पर बैंकों को शैक्षणिक ऋण, कृषि ऋण एवं व्यवसायिक ऋण सरल शर्तों पर दिये जाने हेतु बाध्य किया जाय जिससे माता पिता के शैक्षिक, आर्थिक एवं पारिवारिक स्तर में उन्नयन हो सके।
5. विज्ञान तकनीकी एवं वाणिज्य के प्रति अभिवृत्ति बढ़ाने हेतु कार्यक्रम चलाये जाएं तथा तकनीकी सरकारी संस्थानों की स्थापना की जाए।
6. ग्रामीण एवं कस्बाई क्षेत्रों का बहुआयामी विकास किया जाये जिससे गांव व कस्बों में नगरीय सुविधाएं उपलब्ध हो सके।
7. पारिवारिक वातावरण में बच्चों पर आरोपित अत्यधिक बाध्यता या अत्यधिक स्वतंत्रता दोनों ही उनके स्वाभाविक विकास में अहितकर होती है। अत्यधिक स्वतंत्रता से किशोर अति आत्मविश्वासी एवं उद्दण्ड हो सकता है। और अति बाध्यता उनके आत्मविश्वास को शिथिल कर सकती है। अतः सजगता पूर्ण व्यवहार होना चाहिये।

सारांश–

बालक का ज्यादातर समय अपने परिवार में ही व्यतीत होता है। किसी सुयोग्य छात्र के दिशाहीन हो जाने या आत्मघाती कदम उठाने की दुःखद घटनाएं समाजशास्त्रियों को छात्रों के आत्मविश्वास का पुनःरीक्षण करने को विवश करता है। आत्मविश्वास

एक मनोवैज्ञानिक प्रत्यय है। बालक समस्या आने पर ठीक वैसा ही व्यवहार करता है जैसा कि उसके माता–पिता ने उसके साथ समस्याग्रस्त होने पर किया था। आत्मविश्वास बालक के परिवार से ही प्रस्फुटित एवं पल्लवित होकर उसके व्यक्तित्व में समाहित हो जाता है। बालक हीनता की भावना से ग्रसित होकर अपराधोन्मुख हो जाता है। वहीं श्रेष्ठता की ग्रन्थि भी बालक को सामाजिक विघटन का कारक बना सकती है।

संदर्भ–

1. पी० वी० येग– साइन्टिफिक सोशल सर्वे एण्ड रिसर्च, एशिया पब्लिकेशन 1960 पृ० स०–302
2. बोगार्डस, ई.एम० एस. इन्ट्रोडक्शन आफ सोशल रिसर्च 1936 पृ० स०– 45
3. गुप्त एन. एस०– मूल्य परक शिक्षा अजमेर कृष्ण ब्रदर्स 1987
4. अमर उजाला आगरा उ०प्र०
5. दैनिक जागरण आगरा उ०प्र०